JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ संदेश त्यागी के बाल साहित्य में मानवीय मूल्यों का विश्लेषण

सुनीता सोनी,
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी
वाहेगुरू कालेज, अबोहर

प्रमुख शब्द
मानव गरिमा,साहित्य, बाल मनोविज्ञान,स्वतंत्रता,सद्भाव,धैर्य,समरसता,आत्मनिर्भरता

प्रस्तावना

साहित्य के महत्व के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की विचारधाराएँ प्रचलित हैं। कुछ विचारक और साहित्यकार इस बात में विष्वास करते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण है। वे मानते हैं कि किसी भी समाज के साहित्य में वही परिलक्षित होता है जो समाज में घटित हो रहा होता है। इसी वक्तव्य का एक अर्थ यह भी लिया जाता है कि साहित्य समाज को आईना दिखाने का काम करता है। कुछ साहित्यकार समाज और साहित्य के सम्बन्ध को इस प्रकार व्यक्त करते हैं कि साहित्य समाज के लिये दीपक है। उनके अनुसार साहित्य का काम महज़ इतना नहीं होना चाहिये कि जो कुछ भी समाज में घटित हुआ उसे शब्दों में उतारकर समाज के सामने साहित्य के रूप में रख दे। मात्र इतना भर कर देने से साहित्यकार की भूमिका समाप्त नहीं हो जाती। साहित्यकार को समाज में घटित होने वाली घटनाओं के माध्यम से समाज को एक दिषा भी देने का प्रयास करना चाहिये। उसे समाज में व्याप्त अंधकार को दूर कर दीपक की भॉति प्रकाष को फैलाने का प्रयास भी करना चाहिये।

साहित्य में बाल साहित्य का स्थान

साहित्य की अनेक विधाएँ हैं जिनमें बाल साहित्य महत्वपूर्ण विधाओं में सम्मिलित है। बाल साहित्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि बाल मनोविज्ञान के नये शोध के अनुसार जो संस्कार या विचार बाल मन पर अंकित हो जाते हैं वे आजीवन उसे प्रभावित करते हैं। इसलिये इसी आयु बच्चों को मानवीय मूल्यों को सिखाना अत्यन्त महत्वपर्ण है। औपचारिक रूप से बाल साहित्य भले ही बाद में रचा जाने लगा हो लेकिन भारतीय समाज में बालकों के लिये दादी नानी द्वारा कहानी कहने की परम्परा प्रारम्भ से रही है। कितने ही गहन रहस्यों को सरल भाषा में बाल कविताओं और कहानियों के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी से तीसरी पीढ़ी और इस परम्परा से ज्ञान गंगा प्रवाहित होती रही है। इन कविताओं और कहानियों ने न जाने कितने व्यक्तियों के अच्छा नागरिक बनने में योगदान दिया है।

बाल साहित्य, बच्चों के लिए लिखी गई साहित्यिक रचनाओं का संग्रह होता है जो उन्हें मनोरंजन, शिक्षा, और मानवीय मूल्यों के साथ समृद्ध करता है। इसे एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि यह न केवल बच्चों की रुचि को बढ़ाता है, बल्कि उनके विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। बाल साहित्य का प्रमुख उद्देश्य बच्चों को उनके समस्त विकास के साथ सक्रिय बनाना है। इसमें कहानियां, कविताएं, नाटक, गीत और चित्र कहानियां शामिल होती हैं जो उन्हें शिक्षाप्रद, मनोरंजक और स्वर्गीय बनाती हैं। यह साहित्य बच्चों की भाषा, बुद्धि, सोचने की क्षमता, और नैतिक मूल्यों को समृद्ध करता है। बाल साहित्य में रचनाएं आकर्षक और सरल भाषा में लिखी जाती हैं, ताकि बच्चे आसानी से उन्हें समझ सकें और उन्हें पढ़ने में आनंद आए। कहानियों में सिक्षा, समझदारी, धैर्य, मित्रता, और नैतिक मूल्यों के साथ जीवन के मूल सिद्धांतों को समझाया जाता है। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों को अधिक ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे उनके बौद्धिक विकास में सुधार होता है। इसके साथ ही, इससे उनकी भावनाएं विकसित होती हैं, और उन्हें समाज में अधिक समझदार, जिम्मेदार, और समर्थ बनाता है।

बाल साहित्य का महत्व इस बात में भी है कि यह बच्चों की रचनात्मकता और कला को बढ़ावा देता है। बच्चे इसे पढ़कर और लिखकर नए और रंगीन विचार विकसित करते हैं और खुद को व्यक्त करने का साहस प्राप्त करते हैं।

इस प्रकार, बाल साहित्य बच्चों के समृद्ध विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसके माध्यम से उन्हें शिक्षा, मनोरंजन और सीखने का एक सुनहरा अवसर मिलता है जो उनके जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

डॉ संदेश त्यागी के बाल साहित्य में मानवीय पहलू

डॉ संदेष त्यागी समकालीन साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। दर्षन शास्त्र के विद्यार्थी और व्याख्याता संदेष त्यागी विधि स्नातक भी हैं। वे देष विदेष के कवि सम्मेलनों और मुषायरों में अपने गीतों और ग़ज़लों के लिये ही नहीं जाने जाते अपितु उन्होंने अपनी विभिन्न पुस्तकों के माध्यम से मानवीय मूल्यों को स्थापित करने में भी अपना योगदान दिया है। जहॉ एक ओर यह धारणा पुष्ट होती जा रही है कि कवि सम्मेलनों की वाचिक परम्परा में केवल हास्य व्यंग्य के नाम पर और फूहड़ता के नाम पर कविताएँ परोसी जा रहीं हैं और वाचिक परम्परा के हिन्दी कवियों में साहित्यिक विषय वस्तु या कविता जैसा कुछ भी नहीं है, वहीं डॉ संदेष त्यागी जैसे कुछ नाम ऐसे भी हैं जो मंचों पर भी इन सब धारणाओं को तोड़ने का काम यथाषक्ति अनवरत् रूप से कर रहे हैं। वे कवि सम्मेलनों में अपनी व्यस्तता के बावजूद अपने साहित्यकार होने के धर्म को नहीं भूले हैं और उन्होंने हे राम(गॉधी एक युग पुरूष), कृष्ण कहे अर्जुन सुने, तुम ही बतलाओं गॉधी, मैं तुम्हारा मौन सुन लूँ जैसी पुस्तकें लिखी जो महात्मा गॉधी और गॉधी दर्षन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं तो वहीं दूसरी ओर भगवदगीता का दोहों में भावानुवाद करने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया।

डॉ संदेष त्यागी की बाल कविताओं की अब तक तीन पुस्तकें आ चुकी हैं– आओ भरें उड़ान, घूमती है धरती और पूछो प्रष्न जरूर। घूमती है धरती पर उन्हें पंडित जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी, राजस्थान का मोहन मंडेला पुरस्कार भी मिल चुका है।

डॉ संदेष त्यागी बाल मनोविज्ञान को भली प्रकार समझते हैं और अपनी बाल कविताओं में वे उन विषयों को उठाते हैं जिन पर अन्य बाल साहित्यकारों की नज़र नही पड़ी है। वे यह जानते हैं कि बाल मन पर डाला गया प्रभाव चिरकाल तक रहता है। इसलिये इस मकसद के साथ अपनी कविताओं की रचना करते हैं कि बालक इन कविताओं से सकारात्मक संदेष लेकर जाये। वह अपनी कविताओं में कहीं भी उपदेषात्मक नहीं होते लेकिन फिर भी नैतिक, सामाजिक और मानवीय मूल्यों को बालक के मन मस्तिष्क पर अंकित कर देते हैं। वे अपनी कविताओं में संवैधानिक मूल्यों, राजनैतिक अधिकारों, कर्तव्यों और मूल अधिकारों को बहुत सरल भाषा और मनोरंजक तरीके से बच्चों को परोसने का सफल प्रयास करते हैं।

मनुष्य का जीवन एक अनमोल उपहार है और उसके अंदर सभी मानवीय मूल्य निहित होते हैं। मानवीय मूल्य वे गुण और भाव हैं, जो हमें समाज में एक अच्छे इंसान बनाते हैं और हमें अपने साथी मनुष्यों के साथ समझदारी, समरसता और भाईचारे के साथ रहने का मार्ग दिखाते हैं जैसे सत्यनिष्ठा, अहिंसा, समरसता,धैर्य, आत्मविष्वास, उदारता,आत्मनिर्भरता, बन्धुत्व, भाईचारा, प्रेम, सदभाव आदि प्रमुख मानवीय मूल्य हैं। डॉ संदेष त्यागी ने अपनी बाल कविताओं में इन सभी विषयों को प्रमुखता से उठाया है।

सत्यनिष्ठा

इस दुनिया में सत्य का ही मार्ग जीवन को सही राह पर चलाता है। सत्य का पालन करना दुर्लभ गुण है, परंतु हमें इसे अपने जीवन का एक आदर्श बनाना चाहिए। ''घूमती है धरती'' पुस्तक में सत्यनिष्ठा और वैचारिक स्वतंत्रता के भाव को इस प्रकार व्यक्त करते हैं

वो बोलें तो सो जाऊं मैं वो बोलें तो जागूं
वो बोलें तो रुक जाऊं मैं वो बोलें तो भागूं
जंच जायेगा तो कर लूंगा,नहीं गुलामी करता
मिथ्या,झूठी बातों पर मैं कभी न हामी भरता
ईश्वर ने मस्तिष्क दिया,जमकर उपयोग करूंगा
सच्चाई के साथ रहूंगा, हरगिज़ नहीं डरूंगा।

घूमती है धरती पृष्ठ संख्या 15–16

समरसता–

समरसता का अर्थ है सभी के साथ मिलजुलकर रहना। हमें जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए और सभी को समान मानकर उनके साथ एकता बनानी चाहिए। इस विचार को डॉ संदेष त्यागी ने अनेक कविताओं के माध्यम से स्थापित करने का प्रयास किया है। उन्होंने देष को एक बगिया के रूप में प्रस्तुत किया है जिसमें सभी रंगों के फूल मिल जुल कर रहते हैं और यही उस बाग की खूबसूरती है। इसी प्रकार कोई भी समाज अगर मिलजुल कर रहता हो तो व सुन्दर भी लगता है और तरक्की भी करता है। उदाहरण के तौर पर–

हरे,गुलाबी,नीले फूल, केसरिया और पीले फूल
इक बगिया में खिले हुए थे, उनके दिल भी मिले हुए थे
कोई झोंका जब भी आता, खुशबू दूर दूर ले जाता
कुछ हैरानी जता पूछते, सब बगिया का पता पूछते
दुनिया भर में छाई बगिया, सबसे अव्वल आई बगिया।

पूछो प्रष्न ज़रूर पृष्ठ संख्या 14

इसी प्रकार एक अन्य कविता में वे सब धर्मों के लोगों को साथ रहने का संदेष अत्यन्त मनोरंजक तरीके से देते हैं–

विद्यालय में तो छुट्टी थी, उस दिन जब थी ईद
मुझको घर से बुला ले गये, सलमा और हमीद
पीटर,संजय,सलमा, अनुभा पहले थे मौजूद
खूब मचाई धमा चौकड़ी खूब लगाई कूद
पेट सभी के भरे हुए थे साँस नही आती थी
लेकिन पकवानो की खूशबू जी को ललचाती थी
हम सब ने फिर ईदी पाई, सबके मन हर्षाये
खुशी खुशी फिर सारे बच्चे अपने घर को आए
कितने अच्छे होते हैं ये अपने सब त्यौहार
सब लोगों का मेल कराते, फैलाते हैं प्यार

पूछो प्रष्न ज़रूर, पृष्ठ संख्या 25

डॉ संदेष त्यागी के लिये समरसता जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू है और इसीलिये वे अनेक मनोरंजक घटनाओं की रचना करके उनके माध्यम से बार बार इस पहलू पर ज़ोर देते हैं और बाल मन पर यह अंकित करने का प्रयास करते हैं कि यदि सभी मिलकर रहेंगे और एक दूसरे का सम्मान करेंगे तो किसी भी बाधा पर जीत निष्चित है। अपनी जीत शीर्षक कविता मे इसी पहलू पर बल देते हैं–

विद्यालय के खेलकूद में अपनाई ये नीति
रिले रेस में हम मित्रों की टोली फिर से जीती
पहले तो तेज़ी से दौड़ीं, रोज़ी और मुस्कान
अंतिम दो चक्कर में भागे, बल्ली और इमरान
साथ सदा ही रहते हैं हम, ग़म हो या हों खुशियाँ
ऐसे ही तो जीतेंगे हम मित्रो सारी दुनिया।

घूमती है धरती पृष्ठ संख्या 56

धैर्य–

अन्य मानवीय मूल्यों की भॉति जीवन में धैर्य का भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन में सफलता के लिए धैर्य रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखना हमारे आत्मविश्वास को बढ़ाता है और हमें सही निर्णय लेने में मदद करता है। यदि बाल मन से ही धैर्य रखने की षिक्षा दी जाये तो व्यक्ति के जीवन से अनेक समस्याएँ समाप्त हो जाती हैं और वह सफलता प्राप्त करने की सम्भावनाओं को बढ़ा लेता है। डॉ संदेष त्यागी ने अपनी बाल कविताओं में अनेक स्थानों पर बच्चों को जीवन में धैर्य के महत्व को समझाया है। उन्होंने अत्यन्त मनोरंजक तरीके से अधैर्य के कारण होने वाले नुकसान बताकर अपनी कविता के पात्रों से यह कहलवाया है कि यदि धैर्य होता तो मेरा यह नुकसान बच सकता था। एक बानगी प्रस्तुत है–

अनुभा कहती सपना आया रात मुझे इक ऐसा
एक पेड़ पर लगा हुआ था कितना सारा पैसा
मैंने कुछ पैसों को तोड़ा, उनसे गुड़िया लाई
और बचे पैसों को मुझसे छीन ले गया भाई।
गुस्से में मेरे हाथों से जाने क्या क्या छूटा
बहुत बड़ा नुकसान हुआ फिर मेरा सपना टूटा
अब मैं गुस्सा नहीं करूंगी दिन हो चाहे रात
क्रोध स्वयं का ही शत्रु है लाख टके की बात।

आओ भरें उड़ान, पृष्ठ संख्या 23

उदारता

जीवन में उदारता लाने और मददगार बनने से हमारे दिल की शुद्धि होती है। हमें दूसरों के सहायता के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए और उन्हें खुशियों से भर देना चाहिए। यही उदारता और मदद करने का भाव डॉ संदेष त्यागी की बाल कविताओं में अनेक स्थानों पर दिखाई देता है। वे मनोरंजक तरीके से एक घटना रचते हैं जिनमें दो बच्चों की आपस में लड़ाई हो जाती है लेकिन उसके बाद जब एक बच्चे को भूख लगती है तो दूसरा तुरन्त अपने मतभेदों को त्यागी कर उसे अपने खाने में हिस्सा देता है–

लंच बाक्स लेकर अपना फिर
बोला ये गुरताज
रोती क्यों है खाना खा ले
इसमें से तू आज

पूछो प्रष्न जरूर, पृष्ठ संख्या 26

संवेदनशीलता

संवेदनषीलता एक अत्यन्त महत्वपूर्ण मानवीय मूल्य है जो हमें दूसरों के भावनाओं का अहसास करने की क्षमता प्रदान करता है। यह वह गुण है जो मनुष्य को मनुष्य बनाने और मनुष्य को मनुष्य बने रहने में सहयोग करता है। डॉ संदेष त्यागी के बाल साहित्य में इस गुण को अनेक स्थान पर मानव जीवन के प्रधान सद्गुण के रूप में स्थापित करने का प्रयास सफलता पूर्वक किया गया है। अनेक बाल कविताएँ ऐसे भावों का स्पष्ट चित्रण करती हैं उनकी कविताओं के पात्र बच्चे जहां न केवल अन्य मनुष्य सहित अन्य जीवों के प्रति संवेदनषीलता को व्यक्त करते हैं अपितु वनस्पतियों और वातावरण के प्रति भी संवेदनषील दिखाई देते हैं। आओ भरें उड़ान मे प्रदूषण शीर्षक कविता में जहॉ वे कहते हैं–

बाहर कितना धूल धुआं है
साँस नहीं ले पाते हैं
अगर उठा लीं अपनी पलकें
तो आँसू आ जाते हैं
आओ मिलकर हल खोजें और
करें सामना इनका
वरना ऐसे उड़ जायेंगे
जैसे उड़ता तिनका

आओ भरें उड़ान पृष्ठ संख्या 22

निष्कर्ष–

डॉ संदेष त्यागी की बाल कविताओं में अहिंसा का व्यवहार करने ,मानवतावादी दृष्टिकोंण अपनाने ,दूसरों के प्रति शांतिपूर्वक व्यवहार और सभी व्यक्तियों चाहे वे हमारे जीवन में छोटे हों या बड़े का सम्मान करने,दूसरों के मान–सम्मान का ख्याल रखने आदि के लिये कदम कदम पर बालकों को प्रेरित किया गया है। इसके अलावा डॉ संदेष त्यागी बालकों में संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान भाव जगाने का भी प्रयास करते हैं। वे अपने बाल साहित्य में बालकों को उपरोक्त मूल्यों के अलावा स्वावलंबन तथा स्वयं के पूर्णिकरण की दिशा में प्रयास करने के लिये भी बालकों को प्रेरित करते हैं। डॉ संदेष त्यागी बाल मनोविज्ञान को भली भॉति समझते हैं और वे यह भी जानते हैं कि बाल आयु में पड़े हुए संस्कार चिरकाल ही नहीं व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन में उसके मनस पर अंकित रहते हैं और ये संस्कार ही उसे एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप मे अपना जीवन व्यतीत करने में पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। इसीलिये उन्होंने सहज एवं स्वतः स्फूर्त भाषा में सप्रयास उन मानवीय, सामाजिक व संवैधानिक मूल्यों को स्थापित किया है जो किसी भी बाल साहित्यकार का प्रथम लक्ष्य होना चाहिये।

संदर्भ ग्रन्थ

1 आओ भरें उड़ान, बोधि प्रकाषन 2016
2 घूमती है धरती, बोधि प्रकाषन, 2019
3 पूछो प्रष्न जरूर, बोधि प्रकाषन 2023